

नवोदय विद्यालय समिति , जयपुर संभाग

पूर्व-परिषदीय परीक्षा-द्वितीय सत्र- 2021

अंक योजना

उत्तर-1	निबंध	
	भूमिका	1 अंक
	विषयवस्तु	3 अंक
	उपसंहार	1 अंक

उत्तर - 2	पत्र-	
	संबोधन	1 अंक
	विषयवस्तु	3 अंक
	पत्र की समाप्ति	1 अंक

उत्तर -3 कहानी का सफल संचालन उसके पात्रों के द्वारा ही होता है। पात्रों के गुण -दोष को ही उनका चरित्र कहा जाता है। प्रत्येक पात्र का अपना स्वरूप, स्वभाव और उद्देश्य होता है। पात्रों का अध्ययन कहानी की एक महत्वपूर्ण एवं बुनियादी शर्त है। कहानीकार के सामने पात्रों का स्वरूप जितना स्पष्ट हाँग , उसे पात्रों का चरित्र-चित्रण करने और संवाद लिखने में उतनी ही आसानी होगी। कहानी के पात्रों में सजीवता, हृदय के सुख-दुःख आदि भावों का समावेश होना अत्यंत आवश्यक है।

अथवा

कहानी में द्वंद्व के तत्त्व का होना आवश्यक है। द्वंद्व कथानक को आगे बढ़ाता है तथा कहानी में रोचकता बनाए रखता है। द्वंद्व दो विरोधी तत्वों का टकराव या किसी की खोज में आने वाली बाधाओं या अंतर्द्वंद्व के कारण पैदा होता है। कहानीकार अपने कथानक में द्वंद्व के बिन्दुओं को जितना रखेगा कहानी भी उतनी ही सफलता से आगे बढ़ेगी।

उत्तर- 4. नाटक साहित्य की सर्वोत्तम विधा है , जिसे पढ़ने, सुनने के साथ-साथ देखा भी जाता है। नाटक शब्द की उत्पत्ति नट धातु से हुई है। नट शब्द का अर्थ है अभिनय, जो अभिनेता से जुड़ा हुआ है। इसे रूपक भी कहा जाता है। भारतीय परंपरा में नाटक को दृश्यकाव्य के संज्ञा दी गई है।

अथवा

साहित्य की अन्य विधाएँ अपने लिखित रूप में ही निश्चित और अंतिम रूप प्राप्त कर लेती हैं , किन्तु नाटक लिखित रूप में एक आयामी होता है। मंचन के पश्चात् ही उसमें सम्पूर्णता आती है। अतः साहित्य की अन्य विधाएँ पढ़ने या सुनने तक की यात्रा तय करती हैं , परन्तु नाटक पढ़ने , सुनने के साथ - साथ देखने के तत्त्व को भी अपने में समेटे हुए है।

उत्तर-5 1. आलेख लिखने वाले का व्यक्ति का संबंधित विषय पर सम्यक चिंतन होना चाहिए।

2. आलेख से जुड़े तथ्यों एवं आंकड़ों आदि का उल्लेख पूर्ण स्पष्टता के साथ करना चाहिए।

3. आलेख की भाषा सहज , सरल एवं रोचक होनी चाहिए ।

4. आलेख के प्रस्तुतीकरण में भ्रामक एवं संदिग्ध जानकारीयों का उल्लेख नहीं करना चाहिए।

अथवा

उल्टा पिरामिड शैली में सबसे महत्वपूर्ण तथ्यों , सूचनाओं एवं जानकारी को सबसे पहले अर्थात् प्रारम्भ के अनुच्छेद में लिखा जाता है और कम महत्वपूर्ण समाचार बाद में । छह ककार इस प्रकार है -क्या, कहाँ, कब , कौन , क्यों, कैसे ।

उत्तर - 6 प्रत्येक समाचार-पत्र का अपना एक विशिष्ट पाठक-वर्ग होता है । उस समाचार-पत्र में उसी पाठक वर्ग की रुचि के ही समाचार छापे जाते हैं । समाचार-पत्र को पढ़ने वालों में मध्यम-वर्ग के लोग अधिक होते हैं इसलिए अधिकांश समाचार उन्हींसे संबंधित होते हैं।

अथवा

समाचार में नवीनता का होना अत्यंत आवश्यक है । घटना, विचार आदि जितने नए व ताज़ा होंगे उतना ही समाचार बनने की संभावना बढ़ जाएगी । समाचार का समयानुकूल प्रेषित करना आवश्यक है । दैनिक समाचार-पत्र की अपनी डेडलाइन होती है। प्रायः समाचार पत्र में रात 12 बजे तक के समाचार कवर किए जाते हैं ।

उत्तर-7 (क) सूर्योदय होने पर उषा का जादू टूट जाता है क्योंकि सूर्य की किरणों के प्रभाव से आसमान में छाया लालिमा समाप्त हो जाती है। जिस प्रकार नीले जल में गोरा शरीर कांतिमान और सुंदर लगता है (उज्ज्वल), उसी प्रकार भोर की लाली में सूर्योदय में आकाश की नीलिमा कांतिमान और सुंदर लगती है। (

(ख) जब सभी लोग लक्ष्मण के वियोग में करुणा में डूबे थे तो हनुमान ने साहस किया। उन्होंने वैद्य द्वारा बताई गई संजीवनी लाने का प्रण किया। करुणा के इस वातावरण में हनुमान का यह प्रण सभी के मन में वीर रस का संचार कर गया। सभी वानरों और अन्य लोगों को लगने लगा कि अब लक्ष्मण की मूर्च्छा टूट जाएगी। इसीलिए कवि ने हनुमान के अवतरण को वीर रस का आविर्भाव बताया है।

(ग) फिराक की गजल के प्रथम दो शेर प्रकृति वर्णन को ही समर्पित हैं। प्रथम शेर में कलियों के खिलने की

प्रक्रिया का भावपूर्ण वर्णन है। कवि इस शेर को नव रसों से आरंभ करता है। हर कोमल गाँठ के खुल जाने में कलियों का खिलना और दूसरा प्रतीकात्मक अर्थ भी है कि सब बंधनों से मुक्त हो जाना, संबंध सुधर जाना। इसके बाद कवि कलियों के खिलने से रंगों और सुगंध के फैल जाने की बात करता है। पाठक के समक्ष एक बिंब उभरता है। वह सौंदर्य और सुगंध दोनों को महसूस करता है।

उत्तर-8 (क) जातिप्रथा के पोषक- जीवन, शारीरिक सुरक्षा तथा संपत्ति के अधिकार की स्वतंत्रता को तो- स्वीकार कर लेंगे, परंतु मनुष्य के सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता देने के लिए जल्दी तैयार नहीं होंगे, क्योंकि इस प्रकार की स्वतंत्रता का अर्थ होगा अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता किसी को नहीं है।

(ख) नमक की पुड़िया ले जाने के संबंध में साफिया के मन में यह द्वंद्व था कि वह इस नमक की पुड़िया को चोरी से छिपाकर ले जाए या कहकर दिखाकर ले जाए। पहले वह नमक की पुड़िया को कीनुओं के नीचे छिपाकर टोकरी में रख देती है। तब उसने सोचा इस पर भला किसकी निगाह जाएगी। इसे तो सिर्फ वही जानती है। उसने कस्टम पर वह पुड़िया अखिकारी के सामने रख दी।

(ग) पुराने राजा ने लुट्टन को राजदीक्षा देकर भावी पहलवान बनाना -पर लुट्टन पंद्रह वर्ष से अपने लड़कों को शिक्षा पहलवान बनाया था। यहाँ- चाहता था, परंतु राजा की मृत्यु होते ही उसकी सारी योजना फेल हो गई। नए राजा ने उसे निकाल दिया। सत्ता परिवर्तन होते ही नए राजकुमार ने

विलायती ढंग से शासन शुरू किया। उसने पहलवानी की जगह घोड़ों की रेरा को बढ़ावा दिया, प्रशासनिक शिथिलता को दूर किया और राज-पहलवान को राज-दरबार से हटा दिया।

(घ) नमक की पुड़िया ले जाने के संबंध में साफिया के मन में यह द्वंद्व था कि कहीं कस्टम पर उसकी प्रेम की सौगात पकड़ में ना आ जाए। वह इस नमक की पुड़िया को चोरी से छिपाकर ले जाए या कहकर दिखाकर ले जाए। पहले वह नमक की पुड़िया को कीनूओं के नीचे छिपाकर टोकरी में रख देती है।

उत्तर-9 (क) सिंधुदंडो की व्यवस्था-सभ्यता के शहर मुअनजो-, साधन और नियोजन के विषय में खूब चर्चा हुई है। इस बात से सभी प्रभावित हैं कि वहाँ की अन्नभंडारण व्यवस्था-, जलनिकासी की व्यवस्था अत्यंत विकसित और परिपक्व थी। हर निर्माण बड़ी-बुद्धमानी के साथ किया गया था; यह सोचकर कि यदि सिंधु का जल बस्ती तक फैल भी जाए तो कमकम नुकसान हो। इन सारी-से-व्यवस्थाओं के बीच इस सभ्यता की संपन्नता की बात बहुत ही कमहुई है। वस्तुतः इनमें भव्यता का आडंबर है ही नहीं। व्यापारिक : व्यवस्थाओं की जानकारी मिलती है, मगर सब कुछ आवश्यकताओं से ही जुड़ा हुआ है, भव्यता का प्रदर्शन कहीं नहीं मिलता। संभवतः : वहाँ की लिपि पढ़ ली जाने के बाद इस विषय में अधिक जानकारी मिले। अथवा

नगर नियोजन की मोहनजोदडो अनूठी मिसाल है; इस कथन का मतलब आप बड़े चबूतरे से नीचे की तरफ देखते हुए सहज ही भाँप सकते हैं। इमारतें भले खंडहरों में बदल चुकी हों, मगर शहर की सड़कों और गलियों के विस्तार को स्पष्ट करने के लिए ये खंडहर काफी हैं। यहाँ की कमोवेश सारी सड़कें सीधी हैं या फिर आड़ी। आज वास्तुकार इसे 'ग्रिड प्लान' कहते हैं। आज की सेक्टरमार्क कॉलोनियों - सीधा-में हमें आड़ा 'नियोजन' बहुत मिलता है। लेकिन वह रहनसहन को नीरस बनाता है। शहरों में नियोजन के नाम पर भी हमें - अराजकता ज़्यादा हाथ लगती है। ब्रासीलिया या चंडीगढ़ और इस्लामाबाद 'ग्रिड' शैली के शहर हैं जो आधुनिक नगर नियोजन के प्रतिमान ठहराए जाते हैं, लेकिन उनकी बसावट शहर के खुद विकास करने का कितना अवकाश छोड़ती है इस पर बहुत शंका प्रकट की जाती है।

(ख) ऐन की डायरी से पता चलता है कि वह एक संवेदनशील व अंतर्मुखी लड़की थी। अज्ञातवास में आठ सदस्य रह रहे थे जिनमें वह सबसे छोटी थी। वह तेरह वर्ष की थी। अतः भावनाओं के वेग का सर्वाधिक होना स्वाभाविक है। हालाँकि यहाँ पर उसकी भावनाओं को समझने वाला कोई नहीं है। वह कहती भी है-“काश, कोई तो होता जो मेरी भावनाओं को गंभीरता से समझ पाता। अफ़सोस, ऐसा व्यक्ति अब तक नहीं मिला है, इसलिए तलाश जारी रहेगी।” ऐन खुद को औरों से बेहतर समझती है। पीटर से भी वह खुलकर बात नहीं करती। वह अपनी प्रिय व एकांत की सहयोगिनी गुडिया से बात करती है तथा चिट्ठी के रूप में अपनी भावनाएँ व्यक्त करती है।

अथवा

ऐन ने जब डायरी लिखी वह बहुत ही कठिन दौर था। उस कठिन दौर में यहूदियों का जीवन बहुत कष्टकारी था। उस भयानक ऐतिहासिक दौर का जीवंत दस्तावेज इस डायरी के द्वारा प्रस्तुत किया है। इसी डायरी में अपने अकेलेपन का चित्रण भी ऐन ने किया है। ऐन ने लिखा कि मुझे कभी कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जो मेरी भावनाओं को समझ सके। यह बात सिद्ध करती है कि ऐन की डायरी अगर एक ऐतिहासिक दौर का जीवंत दस्तावेज है तो साथ ही उसके निजी सुखपुथल का -दुख और भावनात्मक उथल-प्रामाणिक अंकन भी है।